Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-3* *Issue-5* *May 2026***

www.researchvidyapith.com **ISSN (Online): 3048-7331**

पैतृक भावनात्मक प्रत्याहार सिद्धांत (PEWT): पिता–वयस्क संतान संबंधों में मनोवैज्ञानिक अनुकूलन को समझने हेतु एक प्रक्रिया–आधारत वैचारक रूपरेखा

डॉ. संजय कुमार

सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, समस्तीपुर कॉलेज,समस्तीपुर, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

डॉ. मनीष कांत

सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, वी.एस.जे. कॉलेज, राजनगर, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

Article Info: *(Received- 21/03/2026, Accept- 14/04/2026, Published- 10/05/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i50019

सार–

Paternal Emotional Withdrawal Theory (PEWT) पिता–वयस्क संतान संबंधों में दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन के प्रति विकसित होने वाली संभावित मनोवैज्ञानिक अनुकूलन–प्रक्रिया की एक प्रक्रिया–आधारित वैचारिक रूपरेखा प्रस्तुत करती है। यह सिद्धांत इस संभावना पर केंद्रित है कि कुछ परिस्थितियों में पिता द्वारा प्रदर्शित भावनात्मक प्रत्याहार प्रेम, अभिभावकीय उत्तरदायित्व या संबंध–विच्छेद का संकेत न होकर भावनात्मक अपेक्षाओं, संबंधात्मक सीमाओं तथा व्यवहारिक सहभागिता के पुनर्संगठन का परिणाम हो सकता है। चॅम्ज में भावनात्मक बंधन एवं सहभागिता, अनुभूत भावनात्मक असंतुलन, संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन, भावनात्मक नियमन, भावनात्मक पुनर्संगठन, व्यवहारिक समायोजन तथा मनोवैज्ञानिक अनुकूलन को प्रमुख प्रक्रियाओं के रूप में प्रस्तावित किया गया है। सिद्धांत यह भी प्रतिपादित करता है कि यह प्रक्रिया संतान–विशिष्ट हो सकती है तथा समय के साथ पुनर्संशोधित हो सकती है। प्रस्तुत रूपरेखा मौजूदा संबंधात्मक एवं विकासात्मक सिद्धांतों का प्रतिस्थापन नहीं, बल्कि उनका प्रक्रिया–केंद्रित वैचारिक विस्तार है। भविष्य के अनुभवजन्य अनुसंधानों द्वारा इसके सैद्धांतिक प्रतिपादनों का परीक्षण आवश्यक है।

कुंजी– पैतृक भावनात्मक प्रत्याहार सिद्धांत, पिता–संतान संबंध, भावनात्मक पारस्परिकता, भावनात्मक प्रत्याहार, संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन, भावनात्मक नियमन, मनोवैज्ञानिक अनुकूलन।

प्रस्तावना

पिता–संतान के बीच का संबंध मानव विकास, परिवार मनोविज्ञान तथा जीवन–पर्यंत संबंधों के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। प्रारंभिक मनोवैज्ञानिक साहित्य में पिता की भूमिका को मुख्यतः आर्थिक संरक्षक, अनुशासनकर्ता तथा परिवार के प्रमुख निर्णयकर्ता के रूप में देखा जाता था, किंतु पिछले तीन दशकों में हुए सैद्धांतिक एवं अनुभवजन्य अनुसंधानों ने यह स्पष्ट किया है कि पिता बच्चों तथा किशोरों के भावनात्मक, सामाजिक, संज्ञानात्मक और नैतिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं (Lamb, 2010 (Cabrera et al., 2018)। परिणामस्वरूप, समकालीन परिवार मनोविज्ञान में पितृत्व को केवल जैविक अथवा सामाजिक भूमिका ही नहीं, बल्कि एक गतिशील, संबंधात्मक तथा विकासशील प्रक्रिया के रूप में देखा जाने लगा है।

अनुसंधानों से यह भी ज्ञात हुआ है कि पिता की भावनात्मक उपलब्धता, सहभागिता, संवेदनशीलता तथा

समर्थन बच्चों के आत्मसम्मान, सामाजिक दक्षता, भावनात्मक नियमन तथा मनोवैज्ञानिक अनुकूलन से सकारात्मक रूप से संबंधित हैं (Lamb, 2010 (Cabrera et al.) 2018)। इसी प्रकार, यह भी देखा गया है कि सकारात्मक एवं सुरक्षित पितादृसंतान संबंध जीवन के विभिन्न विकासात्मक चरणों में बेहतर मानसिक स्वास्थ्य, उच्च शैक्षणिक उपलब्धि तथा संतुलित सामाजिक व्यवहार से जुड़े हुए पाए गए हैं (Bowlby, 1988 (Grossmann et al.] 2002)। इन निष्कर्षों ने यह साबित किया है कि पिता–संतान संबंधों की गुणवत्ता केवल बाल्यावस्था तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसका प्रभाव वयस्कता तक बना रह सकता है।

यद्यपि पितृत्व, पितृ–सहभागिता, आसक्ति, पारिवारिक अंतः क्रियाओं तथा अंतरपीढ़ीगत संबंधों पर व्यापक शोध उपलब्ध है, और अधिकांश अध्ययन इस प्रश्न पर केंद्रित रहे हैं कि पिता का व्यवहार बच्चों या किशोरों के विकास को किस प्रकार प्रभावित करता है। लेकिन इस प्रश्न पर अपेक्षाकृत कम ध्यान पर दिया गया है कि जब पिता अपनी संतानों के किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध अथवा वयस्क संतान के साथ संबंधों में दीर्घकालिक रूप से भावनात्मक पारस्परिकता में कमी का जब अनुभव करते हैं, तब उनके भीतर कौन–सी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ विकसित होती हैं। विशेष रूप से, यह अभी तक पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं हो पाया है कि ऐसे अनुभवों के परिणामस्वरूप पिता अपनी भावनात्मक अपेक्षाओं, संबंधों की व्याख्या तथा व्यवहारिक सहभागिता का पुनर्संगठन किस प्रकार करते हैं।

वर्तमान में उपलब्ध प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोण, जैसे Attachment Theory (Bowlby, 1969-1982, 1988, Family Systems Theory (Bowen, 1978) तथा Life Course Perspective (Elder, Johnson, & Crosnoe, 2003), पिता–संतान संबंधों के जीवन के अनेक महत्वपूर्ण आयामों की व्याख्या करते हैं। जहां Attachment Theory संबंधों में सुरक्षा एवं भावनात्मक बंधन की भूमिका को स्पष्ट करती है; वहीं Family Systems Theory परिवार को एक परस्पर निर्भर प्रणाली के रूप में देखती है; जबकि Life Course Perspective यह प्रतिपादित करती है कि पारिवारिक संबंध समय के साथ सामाजिक एवं विकासात्मक परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। तथापि, ये सिद्धांत विशेष रूप से उस क्रमिक मनोवैज्ञानिक अनुकूलन (psychological adaptation) का विस्तृत प्रक्रिया–मॉडल प्रस्तुत नहीं करते, जिसके माध्यम से पिता वयस्क संतानों के दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन के अनुभव के बाद अपनी अपेक्षाओं, भावनात्मक सीमाओं तथा व्यवहारिक सहभागिता का पुनर्गठन करते हैं।

इसी प्रकार, अंतरपीढ़ीगत संबंधों तथा Intergenerational Ambivalence Theory ने यह दर्शाया है कि माता–पिता और वयस्क संतानों के संबंधों में निकटता, संघर्ष तथा विरोधाभासी भावनाएँ एक साथ विद्यमान हो सकती हैं (Luscher & Pillemer, 1998; Bengtson, 2001)। फिर भी, उपलब्ध साहित्य पारिवारिक संबंधों की गुणवत्ता अथवा परिणामों (relationship outcomes) पर अधिक केंद्रित रहा है, जबकि पिता के आंतरिक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन (internal psychological adaptation) की प्रक्रिया अपेक्षाकृत कम अध्ययनित रही है।

इसी वैचारिक रिक्तता (theoretical gap) को ध्यान में रखते हुए यह शोध Paternal Emotional Withdrawal Theory (PEWT) प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि कुछ परिस्थितियों में पिता का भावनात्मक प्रत्याहार प्रेम, उत्तरदायित्व अथवा अभिभावकीय प्रतिबद्धता में कमी का संकेत नहीं होता, बल्कि संबंधों में अनुभव किए गए दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन के प्रति विकसित होने वाली एक संभावित मनोवैज्ञानिक अनुकूलन–प्रक्रिया हो सकता है। इस दृष्टिकोण में भावनात्मक प्रत्याहार को संबंध–विच्छेद के रूप में नहीं, बल्कि भावनात्मक नियमन, संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन तथा अपेक्षाओं के पुनर्संगठन से जुड़ी एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में समझा गया है।

यह सिद्धांत यह दावा नहीं करता है कि प्रत्येक पिता समान परिस्थितियों में समान प्रतिक्रिया देगा। इसके विपरीत, PEWT यह मानता है कि व्यक्तिगत व्यक्तित्व, पारिवारिक संदर्भ, सांस्कृतिक मान्यताएँ, पूर्व संबंधों की गुणवत्ता, सामाजिक समर्थन तथा संतान के साथ भावनात्मक पारस्परिकता जैसे अनेक कारक इस प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं। अतः यह सिद्धांत एक संभावित प्रक्रिया–आधारित व्याख्यात्मक मॉडल प्रस्तुत करता है, जिसे भविष्य में अनुभवजन्य अध्ययनों के माध्यम से परीक्षण एवं परिष्कृत किया जा सकता है।

इस अध्ययन का उद्देश्य स्थापित सिद्धांतों का प्रतिस्थापन करना नहीं है, बल्कि पिता एवं वयस्क संतान संबंधों के अध्ययन में एक नई, परीक्षण–योग्य तथा प्रक्रिया–केंद्रित सैद्धांतिक रूपरेखा प्रस्तुत करना है, जो पिता के आंतरिक मनोवैज्ञानिक पुनर्संगठन, भावनात्मक नियमन तथा अनुकूलन की प्रक्रिया को विश्लेषण का केंद्र बनाती

है। इस प्रकार, च्ॅम्ज् परिवार मनोविज्ञान, विकासात्मक मनोविज्ञान तथा अंतरपीढ़ीगत संबंधों के साहित्य में एक संभावित वैचारिक विस्तार (conceptual extension) प्रस्तुत करती है।

Literature Review and Research Gap

पिता–संतान संबंधों पर हुए अनुसंधानों में पिछले कुछ दशकों के दौरान उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। प्रारंभिक अध्ययनों में पिता की भूमिका मुख्यतः आर्थिक प्रदाता तथा अनुशासनकर्ता के रूप में वर्णित की जाती थी। किंतु आधुनिक परिवार मनोविज्ञान में पितृत्व को एक बहुआयामी, संबंधात्मक तथा विकासात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जिसमें भावनात्मक उपलब्धता, सहभागिता, उत्तरदायित्व तथा संबंधों की गुणवत्ता प्रमुख आयाम माने जाते हैं (Lamb, 2010 (Cabrera et al., 2018)। अनुसंधानों से यह स्पष्ट हुआ है कि पिता की सक्रिय सहभागिता बच्चों के संज्ञानात्मक विकास, भावनात्मक सुरक्षा, सामाजिक दक्षता तथा मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

इसी संदर्भ में Attachment Theory पिता–संतान संबंधों की व्याख्या के लिए एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार प्रदान करती है। Bowlby (1969 / 1982, 1988) ने यह प्रतिपादित किया कि सुरक्षित लगाव व्यक्ति के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास की आधारशिला है। यद्यपि प्रारंभिक अनुसंधान मुख्यतः मातृ–आसक्ति पर केंद्रित थे, बाद के अध्ययनों ने यह स्थापित किया कि पिता भी बच्चों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण लगाव–व्यक्ति हो सकते हैं (Grossmann et al., 2002)। सुरक्षित एवं संतुलित पितादृसंतान लगाव आत्मविश्वास, अन्वेषणात्मक व्यवहार, भावनात्मक नियमन तथा सामाजिक अनुकूलन को प्रोत्साहित करता है। तथापि, Attachment Theory मुख्यतः लगाव के निर्माण और उसके विकासात्मक परिणामों की व्याख्या करती है; यह उन क्रमिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का विस्तृत मॉडल प्रस्तुत नहीं करती जिनके माध्यम से पिता वयस्क संतान के साथ संबंधों में अनुभव किए गए भावनात्मक असंतुलन के प्रति स्वयं को अनुकूलित करते हैं।

इसी प्रकार, Family Systems Theory (Bowen, 1978) परिवार को एक परस्पर निर्भर प्रणाली के रूप में देखती है, जिसमें प्रत्येक सदस्य का व्यवहार अन्य सदस्यों को प्रभावित करता है। इस सिद्धांत के अनुसार पितादृ संतान संबंधों को परिवार की व्यापक संबंधात्मक संरचना से अलग करके नहीं समझा जा सकता। वैवाहिक संबंध, भाई–बहनों की अंतः क्रियाएँ तथा पारिवारिक संचार सभी पितादृसंतान संबंधों को प्रभावित करते हैं। यद्यपि यह दृष्टिकोण संबंधों के पारिवारिक संदर्भ को समझने में अत्यंत उपयोगी है, फिर भी यह पिता के भीतर विकसित होने वाली संज्ञानात्मक पुनर्व्याख्या, भावनात्मक पुनर्संगठन तथा मनोवैज्ञानिक अनुकूलन की चरणबद्ध प्रक्रिया को स्पष्ट नहीं करता।

विकासात्मक मनोविज्ञान में स्पमि ब्वनतेम च्मतेचमबजपअम यह प्रतिपादित करती है कि पारिवारिक संबंध समय के साथ सामाजिक भूमिकाओं, जीवन–घटनाओं तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार निरंतर परिवर्तित होते रहते हैं (Elder et al., 2003)। इस दृष्टिकोण ने यह समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है कि पिता–संतान संबंध स्थिर न होकर जीवन के प्रत्येक चरण में नए अर्थ ग्रहण करते हैं। विशेषकर तब, जब संतान वयस्क हो जाती है और पारिवारिक भूमिकाएँ अधिक स्वायत्त (autonomous) हो जाती हैं। तथापि, यह दृष्टिकोण भी यह विस्तार से नहीं बताता कि संबंधों में उत्पन्न दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन के प्रति पिता अपनी भावनात्मक अपेक्षाओं और व्यवहार का पुनर्गठन किस प्रकार करते हैं।

हाल के वर्षों में adult parent–child relationships पर अनुसंधानों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इन अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि वयस्क संतान के साथ संबंधों की गुणवत्ता, भावनात्मक निकटता, पारस्परिक सम्मान तथा सामाजिक समर्थन माता–पिता के मानसिक स्वास्थ्य, जीवन–संतुष्टि तथा मनोवैज्ञानिक कल्याण से संबंधित हैं (Bengtson, 2001; Fingerman et al., 2012)। विशेष रूप से वृद्धावस्था में वयस्क संतानों के साथ सकारात्मक संबंध अकेलेपन, अवसाद तथा सामाजिक अलगाव को कम करने में सहायक पाए गए हैं। इसके विपरीत, संबंधों में निरंतर तनाव, उपेक्षा अथवा भावनात्मक दूरी मनोवैज्ञानिक तनाव को बढ़ा सकती है। फिर भी, अधिकांश अध्ययन इन संबंधों के परिणामों (relationship outcomes) पर केंद्रित रहे हैं, न कि उन आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर जिनके माध्यम से पिता इन परिवर्तनों के साथ स्वयं को अनुकूलित करते हैं।

इसी प्रकार, Intergenerational Relationship Research तथा Intergenerational Ambivalence Theory यह स्वीकार करते हैं कि माता–पिता और वयस्क संतान के संबंधों में प्रेम, निकटता, निराशा, संघर्ष तथा

विरोधाभासी भावनाएँ एक साथ विद्यमान रह सकती हैं (Luscher & Pillemer, 1998; Pillemer et al., 2007)। यह दृष्टिकोण संबंधों की जटिलता को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। तथापि, यह सिद्धांत मुख्यतः संबंधों की द्वैधता (ambivalence) का वर्णन करता है; यह स्पष्ट नहीं करता कि पिता इस प्रकार के अनुभवों के पश्चात अपनी भावनात्मक सीमाओं, अपेक्षाओं तथा व्यवहार का पुनर्संगठन किस प्रकार करते हैं।

दूसरी ओर, म्उवजपवदंस त्महनसंजपवद जीमवतल तथा ब्वहदपजपअम त्मंचचतंपेंस पर हुए अनुसंधानों ने यह प्रदर्शित किया है कि व्यक्ति तनावपूर्ण अथवा निराशाजनक परिस्थितियों में अपनी भावनाओं तथा अपेक्षाओं का पुनर्मूल्यांकन करके बेहतर मनोवैज्ञानिक अनुकूलन विकसित कर सकता है (Gros, 1998, 2015)। संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन (cognitive reappraisal) को मानसिक स्वास्थ्य तथा भावनात्मक संतुलन बनाए रखने की एक प्रभावी रणनीति माना जाता है। किंतु इन सिद्धांतों का उपयोग मुख्यतः सामान्य भावनात्मक प्रक्रियाओं की व्याख्या में किया गया है; इन्हें पिता एवं वयस्क संतान संबंधों में अनुभव किए जाने वाले दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन के संदर्भ में व्यवस्थित रूप से विकसित नहीं किया गया है।

एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र Parental Differential Treatment (PDT) का है। इस क्षेत्र के अनुसंधानों ने यह दर्शाया है कि माता–पिता अपनी विभिन्न संतानों के प्रति समान स्तर का व्यवहार, समर्थन अथवा भावनात्मक निवेश नहीं रखते, और यह अंतर भाई–बहनों के संबंधों, आत्मसम्मान तथा मनोवैज्ञानिक समायोजन को प्रभावित कर सकता है (Suitor et al., 2008(Jensen & Whiteman, 2014)। हालांकि उपलब्ध साहित्य का प्रमुख ध्यान इस असमान व्यवहार के बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों पर केंद्रित रहा है। अपेक्षाकृत कम अनुसंधानों ने यह समझने का प्रयास किया है कि पिता स्वयं किन मनोवैज्ञानिक कारणों से किसी एक संतान के साथ अधिक भावनात्मक निकटता बनाए रख सकते हैं, जबकि अन्य संतानों के प्रति उनका भावनात्मक निवेश क्रमशः कम हो सकता है। यह आयाम विशेष रूप से PEWT के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दर्शाता है कि भावनात्मक प्रत्याहार परिवार–व्यापी होने के बजाय संतान–विशिष्ट भी हो सकता है।

उपलब्ध अनुभवजन्य साहित्य का समग्र विश्लेषण यह संकेत देता है कि अधिकांश अध्ययन तीन प्रमुख प्रश्नों पर केंद्रित रहे हैं– (i) पिता का व्यवहार संतान के विकास को कैसे प्रभावित करता है, (ii) संबंधों की गुणवत्ता किन कारकों से निर्धारित होती है, तथा (iii) पारिवारिक संरचना संबंधों को किस प्रकार प्रभावित करती है। इसके विपरीत, अपेक्षाकृत कम ध्यान इस प्रश्न पर दिया गया है कि जब पिता स्वयं दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन का अनुभव करते हैं, तब वे उस अनुभव का अर्थ कैसे निर्मित करते हैं, अपनी अपेक्षाओं का पुनर्मूल्यांकन किस प्रकार करते हैं, और समय के साथ अपने भावनात्मक तथा व्यवहारिक निवेश का पुनर्संगठन कैसे करते हैं।

इसी प्रकार, उपलब्ध सिद्धांत भावनात्मक निकटता, संघर्ष, लगाव, पारिवारिक संरचना अथवा भावनात्मक नियमन के विभिन्न आयामों की प्रभावी व्याख्या करते हैं, किंतु कोई भी सिद्धांत इन सभी प्रक्रियाओं को एकीकृत करते हुए पिता के दृष्टिकोण से विकसित होने वाली क्रमिक मनोवैज्ञानिक अनुकूलन–प्रक्रिया का स्पष्ट मॉडल प्रस्तुत नहीं करता। यही वर्तमान साहित्य की प्रमुख सैद्धांतिक रिक्तता है।

इसी वैचारिक रिक्तता को संबोधित करने के लिए सामाजिक–पारिवारिक अध्ययनों के लिए Paternal Emotional Withdrawal Theory (PEWT) को एक सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। यह सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि, कुछ परिस्थितियों में पिता का भावनात्मक प्रत्याहार– प्रेम, उत्तरदायित्व अथवा संबंध–विच्छेद का संकेत नहीं होता, बल्कि संबंधों में अनुभव किए गए दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन के प्रति विकसित होने वाली एक संभावित मनोवैज्ञानिक अनुकूलन–प्रक्रिया हो सकता है। चॅम्ज का मुख्य योगदान संबंधों के परिणामों की अपेक्षा उन मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर बल देना है जिनके माध्यम से पिता अपनी भावनात्मक अपेक्षाओं, संज्ञानात्मक व्याख्याओं तथा व्यवहारिक सहभागिता का क्रमिक पुनर्संगठन करते हैं। इस प्रकार यह सिद्धांत उपलब्ध साहित्य का प्रतिस्थापन नहीं, बल्कि उसका एक प्रक्रिया–आधारित चारिक विस्तार प्रस्तुत करता है।

Paternal Emotional Withdrawal Theory (PEWT)

Conceptual Foundation (वैचारिक आधार)

Paternal Emotional Withdrawal Theory (PEWT) एक प्रक्रिया–आधारित वैचारिक सिद्धांत है, जिसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि जब पिता अपनी किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध वाले संतानों यानी वयस्क संतान के

साथ संबंधों में दीर्घकालिक रूप से भावनात्मक पारस्परिकता में कमी का अनुभव करते हैं, तब उनके भीतर कौन–सी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ क्रमिक रूप से विकसित होती हैं। यह सिद्धांत इस धारणा को कतई चुनौती नहीं देता कि अधिकांश पिता अपनी संतान के प्रति आजीवन स्नेह, उत्तरदायित्व तथा नैतिक प्रतिबद्धता बनाए रखते हैं। बल्कि, PEWT यह प्रतिपादित करता है कि कुछ परिस्थितियों में संबंधों में दिखाई देने वाला भावनात्मक प्रत्याहार प्रेम या अभिभावकीय उत्तरदायित्व की समाप्ति का संकेत नहीं होता, बल्कि संबंधों में अनुभव किए गए दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन के प्रति विकसित होने वाली एक संभावित मनोवैज्ञानिक अनुकूलन–प्रक्रिया हो सकता है।

वर्तमान सिद्धांत में 'भावनात्मक प्रत्याहार' शब्द का प्रयोग भावनात्मक उपेक्षा, अस्वीकृति, संबंध–विच्छेद अथवा अभिभावकीय दायित्वों से विमुख होने के अर्थ में नहीं किया गया है। इसके विपरीत, इससे आशय उस क्रमिक एवं अनुकूलनात्मक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से है, जिसके माध्यम से पिता संबंधों में अनुभव किए गए दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन के परिणामस्वरूप अपनी भावनात्मक अपेक्षाओं, संबंधात्मक निवेश तथा व्यवहारिक सहभागिता का पुनर्संतुलन करते हैं। अतः इस सिद्धांत में भावनात्मक प्रत्याहार को संबंधों से पलायन नहीं, बल्कि संबंधों के परिवर्तित स्वरूप के अनुरूप विकसित होने वाले भावनात्मक एवं व्यवहारिक पुनर्संगठन के रूप में समझा जा सकता है।

यह सिद्धांत इस आधार पर विकसित किया गया है कि पारिवारिक संबंध स्थिर (static) नहीं होते, बल्कि समय, अनुभव, सामाजिक भूमिकाओं तथा पारस्परिक व्यवहार के अनुसार निरंतर परिवर्तित होते रहते हैं (Bowen, 1978; Elder et al., 2003)। इसी प्रकार, व्यक्ति तनावपूर्ण अथवा निराशाजनक संबंधात्मक परिस्थितियों में अपनी भावनाओं, अपेक्षाओं तथा व्यवहार का पुनर्मूल्यांकन कर सकता है, जिससे दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक संतुलन बनाए रखने में सहायता मिलती है। PEWT इन व्यापक सैद्धांतिक अवधारणाओं को पिता एवं वयस्क संतान–संबंधों के विशिष्ट संदर्भ में एकीकृत करते हुए यह प्रस्तावित करता है कि पिता का मनोवैज्ञानिक अनुकूलन एक क्रमिक, गतिशील तथा संदर्भ–संवेदनशील प्रक्रिया है।

PEWT यह भी स्वीकार करता है कि सभी पिता समान परिस्थितियों में समान प्रतिक्रिया नहीं देंगे। व्यक्तिगत व्यक्तित्व, सांस्कृतिक मूल्य, पारिवारिक संरचना, वैवाहिक संबंध, पूर्व पितादृसंतान संबंधों की गुणवत्ता, सामाजिक समर्थन तथा संतान की प्रतिक्रियाएँ इस प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए यह सिद्धांत किसी सार्वभौमिक व्यवहार की भविष्यवाणी नहीं करता, बल्कि एक संभावित सैद्धांतिक मॉडल प्रस्तुत करता है, जिसे भविष्य के संभावित अनुभवजन्य अनुसंधानों द्वारा परीक्षण, सत्यापन तथा परिष्कृत किया जा सकता है। इस प्रकार, चॅम्ज् पितादृसंतान संबंधों में अनुभव किए गए दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन के प्रति विकसित होने वाली मनोवैज्ञानिक अनुकूलन–प्रक्रिया की एक व्यवस्थित, प्रक्रिया–केंद्रित एवं परीक्षण–योग्य वैचारिक रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

भावनात्मक परिवर्तन की प्रमुख प्रक्रियाएँ

PEWT में पिता और संतान के संबंधों में होने वाले भावनात्मक बदलाव को समझाने के लिए सात प्रमुख प्रक्रियाओं की पहचान की गई है। ये प्रक्रियाएँ किसी कठोर या निश्चित क्रम में नहीं होतीं, बल्कि एक–दूसरे से जुड़ी रहती हैं और परिस्थितियों के अनुसार एक–दूसरे को प्रभावित कर सकती हैं। इनके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाता है कि पिता संतान के साथ विकसित भावनात्मक संबंधों और सहभागिता में आए बदलाव को किस प्रकार अनुभव करते हैं, उसका अर्थ कैसे समझते हैं और उसके अनुसार अपनी भावनाओं, अपेक्षाओं तथा व्यवहार में किस प्रकार परिवर्तन करते हैं।

1. भावनात्मक बंधन एवं सहभागिता

भावनात्मक बंधन एवं सहभागिता से आशय पिता और संतान के बीच विकसित होने वाले उस गहरे भावनात्मक जुड़ाव तथा पिता की उस निरंतर सहभागिता से है, जिसके माध्यम से वे संतान के पालन–पोषण, सुरक्षा, शिक्षा, मार्गदर्शन, उपलब्धियों और कल्याण में सक्रिय रूप से जुड़े रहते हैं। इसमें केवल आर्थिक सहायता देना ही शामिल नहीं होता, बल्कि संतान के लिए समय निकालना, उसकी समस्याओं को समझना, कठिन परिस्थितियों में उसका साथ देना, उसकी उपलब्धियों में रुचि लेना और भावनात्मक रूप से उसके लिए उपलब्ध रहना भी शामिल होता है। समय के साथ यह सहभागिता पिता और संतान के बीच एक मजबूत भावनात्मक संबंध

का आधार बन सकती है। इसी कारण पिता के मन में यह अपेक्षा भी विकसित हो सकती है कि संतान के साथ संबंधों में आत्मीयता, सम्मान, संवाद और भावनात्मक जुड़ाव बना रहेगा। PEWT में यह भावनात्मक बंधन एवं सहभागिता आगे होने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की पृष्ठभूमि तैयार करती है।

2. अनुभूत भावनात्मक असंतुलन

जब पिता को यह महसूस होने लगता है कि उन्होंने संतान के साथ संबंधों में जितना समय, प्रेम, देखभाल और भावनात्मक प्रयास किया है, उसके अनुरूप उन्हें अपेक्षित आत्मीयता, सम्मान, संवाद या भावनात्मक जुड़ाव नहीं मिल रहा है, तो उनके भीतर अनुभूत भावनात्मक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यह आवश्यक नहीं है कि संबंधों में वास्तव में उतना ही असंतुलन मौजूद हो जितना पिता अनुभव कर रहे हैं। महत्वपूर्ण यह है कि पिता संतान के व्यवहार और संबंधों की स्थिति को किस प्रकार समझते और अनुभव करते हैं। उदाहरण के लिए, संतान का कम बातचीत करना उसकी व्यस्तता या व्यक्तिगत परिस्थितियों का परिणाम हो सकता है, लेकिन पिता इसे भावनात्मक दूरी या उपेक्षा के रूप में अनुभव कर सकते हैं। इस प्रकार, PEWT में अनुभूत भावनात्मक असंतुलन को उस मनोवैज्ञानिक स्थिति के रूप में देखा जाता है जहाँ पिता को अपने और संतान के बीच भावनात्मक जुड़ाव में कमी या असमानता महसूस होने लगती है। यही अनुभव आगे होने वाली सोच, भावनात्मक प्रतिक्रिया और व्यवहारिक परिवर्तन की पृष्ठभूमि तैयार कर सकता है।

3. संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन

जब भावनात्मक असंतुलन लंबे समय तक बना रहता है, तो पिता अपने संबंधों और अपनी अभिभावकीय भूमिका के बारे में नए सिरे से सोचने लग सकते हैं। वे यह समझने का प्रयास कर सकते हैं कि संबंधों में बदलाव क्यों आया है, संतान के व्यवहार के पीछे क्या कारण हो सकते हैं और भविष्य में उनसे कितनी अपेक्षा रखना उचित होगा। इस प्रक्रिया में पिता अपनी पुरानी धारणाओं और अपेक्षाओं पर पुनर्विचार करते हैं। वे यह तय करने का प्रयास कर सकते हैं कि किन अपेक्षाओं को बनाए रखना उचित है और किन अपेक्षाओं को बदलना आवश्यक है। इस प्रकार संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन व्यक्ति को परिस्थितियों को नए दृष्टिकोण से समझने और अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को अधिक संतुलित करने में सहायता कर सकता है (Gros, 1998, 2015)।

4. भावनात्मक नियमन

संबंधों में अपेक्षित आत्मीयता या भावनात्मक जुड़ाव कम होने पर पिता के भीतर निराशा, दुख, अस्वीकृति, क्रोध या तनाव जैसी भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसी स्थिति में वे अपनी भावनाओं को नियंत्रित और व्यवस्थित करने का प्रयास कर सकते हैं। इसी प्रक्रिया को भावनात्मक नियमन कहा जाता है। इसका उद्देश्य संतान से संबंध समाप्त करना या पूरी तरह दूर हो जाना नहीं होता। बल्कि, इसका उद्देश्य अपनी भावनाओं को इस प्रकार संभालना होता है कि व्यक्ति अत्यधिक दुख, क्रोध या निराशा में आकर कोई ऐसा निर्णय न ले जो उसके लिए या संबंधों के लिए हानिकारक हो। प्रभावी भावनात्मक नियमन पिता को अपनी स्थिति को शांत और संतुलित तरीके से देखने में सहायता कर सकता है।

5. भावनात्मक पुनर्संगठन

यदि संबंधों में भावनात्मक असंतुलन लंबे समय तक बना रहता है, तो पिता धीरे–धीरे अपनी अपेक्षाओं और भावनात्मक सहभागिता को नए सिरे से व्यवस्थित कर सकते हैं। वे यह समझने लगते हैं कि संबंध पहले जैसे नहीं रहे हैं और इसलिए अपनी भावनात्मक अपेक्षाओं तथा सीमाओं को वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप बदलना आवश्यक हो सकता है। इस प्रक्रिया में पिता यह तय कर सकते हैं कि संबंधों में उन्हें कितना भावनात्मक रूप से जुड़ना है, किन बातों की अपेक्षा करनी है और किन परिस्थितियों में अपनी भावनात्मक सीमाएँ बनाए रखनी हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि संतान के प्रति उनका प्रेम या जिम्मेदारी समाप्त हो जाती है। बल्कि, वे बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप अपने भावनात्मक जुड़ाव को अधिक यथार्थवादी और संतुलित बनाने का प्रयास करते हैं। चॅम्ज में भावनात्मक पुनर्संगठन काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही प्रक्रिया आगे चलकर पिता के भावनात्मक प्रत्याहार की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि तैयार कर सकती है।

6. व्यवहारिक समायोजन

पिता के विचारों और भावनात्मक अनुभवों में होने वाले बदलाव का प्रभाव उनके व्यवहार पर भी पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, वे पहले की तुलना में कम बार बातचीत शुरू कर सकते हैं, संवाद की आवृत्ति कम कर

सकते हैं, अपनी भावनाओं को कम व्यक्त कर सकते हैं या संबंधों में अपनी पहल को सीमित कर सकते हैं। बाहर से देखने पर इस प्रकार का व्यवहार भावनात्मक दूरी जैसा दिखाई दे सकता है, लेकिन इसका अर्थ हमेशा यह नहीं होता कि पिता ने संतान से संबंध समाप्त कर लिया है या उसके प्रति उनका प्रेम समाप्त हो गया है। कई बार यह बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप किया गया एक व्यवहारिक समायोजन होता है। इस प्रकार, पिता के व्यवहार में दिखाई देने वाला परिवर्तन उनके भीतर चल रही संज्ञानात्मक और भावनात्मक प्रक्रियाओं की अभिव्यक्ति हो सकता है।

7. मनोवैज्ञानिक अनुकूलन

PEWT की अंतिम प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक अनुकूलन है। इसमें पिता बदले हुए संबंधों को स्वीकार करते हुए अपने मानसिक और भावनात्मक संतुलन को फिर से स्थापित करने का प्रयास करते हैं। वे यह समझने लगते हैं कि संबंधों का स्वरूप पहले जैसा नहीं है और अपनी भावनाओं, अपेक्षाओं तथा व्यवहार को वर्तमान स्थिति के अनुरूप ढालना आवश्यक है। मनोवैज्ञानिक अनुकूलन का अर्थ यह नहीं है कि पिता की भावनात्मक पीड़ा पूरी तरह समाप्त हो जाती है या संतान के प्रति उनका प्रेम खत्म हो जाता है। इसका अर्थ यह है कि वे उस पीड़ा और बदले हुए संबंध के साथ अधिक संतुलित एवं कार्यात्मक तरीके से जीवन को आगे बढ़ाना सीख सकते हैं। यह अनुकूलन स्थायी या अपरिवर्तनीय भी नहीं माना जाता। यदि भविष्य में पिता और संतान के बीच संवाद बढ़ता है, विश्वास फिर से स्थापित होता है और भावनात्मक पारस्परिकता विकसित होती है, तो पिता अपने पुराने स्तर के भावनात्मक बंधन और सहभागिता की ओर फिर से लौट सकते हैं। इस प्रकार, PEWT में मनोवैज्ञानिक अनुकूलन को संबंधों की अंतिम समाप्ति के रूप में नहीं, बल्कि बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने वाली एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है।

पैतृक भावनात्मक प्रत्याहार की प्रक्रियात्मक रूपरेखा

PEWT के अनुसार पिता का भावनात्मक प्रत्याहार एक आकस्मिक अथवा एकल घटना नहीं है, बल्कि एक क्रमिक, संदर्भ–संवेदनशील तथा पुनर्संशोध्य मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया उस समय प्रारंभ होती है जब पिता अपनी संतान के प्रति किए गए दीर्घकालिक भावनात्मक निवेश और संबंधों में प्राप्त भावनात्मक पारस्परिकता के बीच निरंतर असंतुलन का अनुभव करते हैं। यदि यह अनुभव अल्पकालिक हो, तो सामान्यतः संबंधों पर उसका स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता। किंतु जब यह असंतुलन लंबे समय तक बना रहता है, तब पिता संबंधों की प्रकृति, अपनी भूमिका तथा भविष्य की अपेक्षाओं का संज्ञानात्मक प्रारंभ कर सकते हैं। संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन के पश्चात पिता अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने तथा निरंतर मनोवैज्ञानिक तनाव को कम करने का प्रयास करते हैं। यही प्रक्रिया आगे चलकर भावनात्मक पुनर्संगठन का आधार बनती है, जिसमें अपेक्षाओं, भावनात्मक सीमाओं तथा संबंधों में निवेश के स्वरूप का पुनर्संतुलन विकसित होता है। इस पुनर्संगठन के परिणामस्वरूप व्यवहारिक समायोजन दिखाई दे सकता है, जैसे संवाद की आवृत्ति में परिवर्तन, पहल में कमी, अथवा भावनात्मक अभिव्यक्ति का अधिक नियंत्रित होना। अंततः पिता संबंधों की वर्तमान वास्तविकताओं के अनुरूप एक नया मनोवैज्ञानिक संतुलन विकसित करने का प्रयास करते हैं, जिसे PEWT में Psychological Adaptation कहा गया है। PEWT की यह प्रक्रिया पूर्णतः रैखिक या अपरिवर्तनीय नहीं है। यदि समय के साथ पिता और संतान के बीच विश्वास, संवाद, पारस्परिक सम्मान अथवा भावनात्मक निकटता पुनः विकसित होती है, तो संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन, भावनात्मक पुनर्संगठन तथा व्यवहारिक समायोजन भी सकारात्मक दिशा में परिवर्तित हो सकते हैं। अतः भावनात्मक प्रत्याहार को स्थायी संबंध–विच्छेद के रूप में नहीं, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होने वाली एक गतिशील मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में समझा जाना चाहिए।

PEWT के अंतर्गत इस प्रक्रिया को निम्नलिखित क्रम में प्रस्तुत किया गया है–

भावनात्मक बंधन एवं सहभागिता अनुभूत भावनात्मक असंतुलन संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन भावनात्मक नियमन भावनात्मक पुनर्संगठन व्यवहारिक समायोजन मनोवैज्ञानिक अनुकूलन।

यह अनुक्रम सिद्धांत की केंद्रीय प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है तथा भविष्य के अनुभवजन्य अध्ययनों में इसके प्रत्येक निर्माण तथा उनके पारस्परिक संबंधों का परीक्षण किया जा सकता है।

विभिन्न संतानों के प्रति भावनात्मक निवेश में भिन्नता

PEWT का एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक प्रतिपादन यह है कि यदि किसी पिता की एक से अधिक संतान हों, तो

भावनात्मक प्रत्याहार सभी संतानों के प्रति समान रूप से विकसित होना आवश्यक नहीं है। पारिवारिक संबंधों में प्रत्येक संतान के साथ संवाद, भावनात्मक निकटता, व्यक्तित्व–सामंजस्य, पारस्परिक सम्मान तथा जीवन–अनुभव अलग–अलग हो सकते हैं। परिणामस्वरूप, पिता प्रत्येक संतान के साथ संबंधों का मूल्यांकन भी अलग–अलग करते हैं। यदि किसी विशेष संतान के साथ भावनात्मक पारस्परिकता, विश्वास तथा सम्मान अपेक्षाकृत अधिक बना रहता है, तो पिता उस संबंध में अपेक्षाकृत अधिक भावनात्मक निवेश बनाए रख सकते हैं। इसके विपरीत, जिन संतानों के साथ दीर्घकालिक रूप से भावनात्मक असंतुलन, संवादहीनता अथवा संबंधात्मक तनाव का अनुभव होता है, उनके संदर्भ में संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन, भावनात्मक पुनर्संगठन तथा व्यवहारिक समायोजन अपेक्षाकृत अधिक विकसित हो सकता है। इस प्रकार, भावनात्मक प्रत्याहार परिवार के सभी संबंधों में समान रूप से लागू होने के बजाय संतान–विशिष्ट रूप भी धारण कर सकता है।

यह अवधारणा Parental Differential Treatment (Suitor et al., 2008 (Jensen & Whiteman, 2014) के साहित्य से आंशिक रूप से संबंधित है, किंतु उससे एक महत्वपूर्ण बिंदु पर भिन्न है। उपलब्ध अनुसंधानों का प्रमुख ध्यान इस बात पर रहा है कि माता–पिता के असमान व्यवहार का संतानों पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत, PEWT का केंद्र यह समझना है कि पिता स्वयं किन मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से विभिन्न संतानों के प्रति अपने भावनात्मक निवेश का पुनर्संगठन करते हैं। इस प्रकार, PEWT भावनात्मक निवेश को एक स्थिर व्यक्तित्व–विशेषता के रूप में नहीं, बल्कि संबंधों की गुणवत्ता तथा अनुभव की गई भावनात्मक पारस्परिकता के अनुसार परिवर्तित होने वाली एक गतिशील संबंधात्मक प्रक्रिया के रूप में देखता है।

यहां पर यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि PEWT किसी भी प्रकार के पक्षपात या भेदभावपूर्ण अभिभावकीय व्यवहार का समर्थन नहीं करता है , बल्कि यह सिद्धांत केवल उन संभावित मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की व्याख्या प्रस्तुत करता है जिनके माध्यम से कुछ परिस्थितियों में पिता विभिन्न संतानों के साथ अपने भावनात्मक निवेश और संबंधात्मक सहभागिता का पुनर्संगठन कर सकते हैं। इसलिए इस अवधारणा को एक वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक मॉडल के रूप में देखना होगा, न कि किसी आदर्श अभिभावकीय व्यवहार के रूप में।

सैद्धांतिक प्रतिपादन

PEWT एक प्रक्रिया–आधारित वैचारिक सिद्धांत है। इसलिए इसके प्रमुख सैद्धांतिक प्रतिपादन भविष्य में किए जाने वाले अनुभवजन्य अनुसंधानों के लिए परीक्षण–योग्य परिकल्पनाओं का आधार प्रदान करते हैं। ये प्रतिपादन यह स्पष्ट करते हैं कि पिता के भावनात्मक अनुभव, संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं, भावनात्मक नियमन तथा व्यवहारिक समायोजन के बीच किस प्रकार के संभावित संबंध की अपेक्षा की जाती है। चॅम्ज के प्रमुख सैद्धांतिक प्रतिपादन निम्नलिखित हैं–

प्रतिपादन 1. पिता द्वारा अनुभूत भावनात्मक असंतुलन जितना अधिक होगा, संबंधों के प्रति संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

प्रतिपादन 2. संज्ञानात्मक पुनर्मूल्यांकन भावनात्मक नियमन तथा भावनात्मक पुनर्संगठन की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करेगा, जिससे पिता अपनी अपेक्षाओं और संबंधात्मक सीमाओं का पुनर्संतुलन विकसित कर सकेंगे।

प्रतिपादन 3. प्रभावी भावनात्मक नियमन, दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक अनुकूलन से सकारात्मक रूप से संबंधित होगा तथा संबंधों में अनुभव होने वाले मनोवैज्ञानिक तनाव को कम करने में सहायक होगा।

प्रतिपादन 4. भावनात्मक पुनर्संगठन व्यवहारिक समायोजन में परिलक्षित होगा, जिसमें संवाद, पहल, सहभागिता तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति के स्वरूप में परिवर्तन देखा जा सकता है। इन परिवर्तनों को संबंध–विच्छेद के रूप में नहीं, बल्कि अनुकूलनात्मक व्यवहार के रूप में समझा जाना चाहिए।

प्रतिपादन 5. यदि समय के साथ पिता और संतान के बीच भावनात्मक पारस्परिकता, संवाद तथा पारस्परिक सम्मान में सुधार होता है, तो भावनात्मक पुनर्संगठन और व्यवहारिक समायोजन भी सकारात्मक दिशा में परिवर्तित हो सकते हैं। इसलिए PEWT इस प्रक्रिया को पुनर्संशोध्य एवं गतिशील मानता है।

प्रतिपादन 6. यदि परिवार में एक से अधिक संतान हों, तो प्रत्येक संतान के साथ अनुभूत भावनात्मक पारस्परिकता के स्तर के अनुसार पिता का भावनात्मक निवेश तथा मनोवैज्ञानिक अनुकूलन भिन्न–भिन्न हो सकता है। अतः PEWT यह प्रतिपादित करता है कि भावनात्मक प्रत्याहार परिवार–स्तरीय होने के बजाय संतान–विशिष्ट भी हो सकता है।

इन प्रतिपादनों के आधार पर भविष्य में अनुदैर्ध्य, मिश्रित–पद्धति तथा सांस्कृतिक तुलनात्मक अध्ययनों के माध्यम से PEWT की वैधता का परीक्षण किया जा सकता है। साथ ही, संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग जैसी सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके इसके प्रस्तावित मनोवैज्ञानिक निर्माणों के पारस्परिक संबंधों की भी जाँच की जा सकती है।

सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक निहितार्थ

PEWT का प्रमुख सैद्धांतिक मान्यता यह है कि यह पिता एवं वयस्क संतानों के बीच के संबंधों के अध्ययन पिता की आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के रूप में करता है। जहाँ अधिकांश उपलब्ध सिद्धांत पिता के व्यवहार, संतान के विकास अथवा संबंधों की गुणवत्ता पर केंद्रित हैं, वहीं PEWT यह समझाने का प्रयास करता है कि दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन का अनुभव करने के पश्चात पिता अपनी अपेक्षाओं, भावनात्मक सीमाओं तथा व्यवहारिक सहभागिता का पुनर्संगठन किस प्रकार करते हैं। इस प्रकार यह सिद्धांत Attachment Theory] Family Systems Theory तथा Intergenerational Relationship Research का प्रतिस्थापन नहीं, बल्कि उनका प्रक्रिया–आधारित विस्तार प्रस्तुत करता है।

व्यावहारिक दृष्टि से PEWT परिवार परामर्श, वैवाहिक एवं पारिवारिक चिकित्सा तथा वृद्धावस्था मनोविज्ञान में उपयोगी सैद्धांतिक रूपरेखा प्रदान कर सकता है। यदि किसी पिता के व्यवहार में संवाद या सहभागिता में कमी दिखाई देती है, तो उसे केवल उदासीनता, अस्वीकृति अथवा संबंध–विच्छेद के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। कुछ परिस्थितियों में यह दीर्घकालिक भावनात्मक तनाव के प्रति विकसित हुई एक अनुकूलनात्मक प्रतिक्रिया भी हो सकती है। ऐसी स्थिति में परामर्शदाता संबंधों में संवाद, भावनात्मक पारस्परिकता तथा अपेक्षाओं के यथार्थवादी पुनर्संतुलन पर कार्य कर सकते हैं।

सीमाएँ एवं भविष्य के अनुसंधान

PEWT एक वैचारिक सिद्धांत है। वर्तमान अध्ययन में इसके प्रतिपादनों का प्रत्यक्ष परीक्षण आंकड़ों के आधार पर नहीं किया गया है। इसलिए इसकी वैधता तथा सामान्यीकरण का मूल्यांकन भविष्य के अनुभवजन्य अनुसंधानों द्वारा किया जाना आवश्यक है। यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि PEWT का आधार पिता द्वारा अनुभव किया गया भावनात्मक असंतुलन (perceived emotional imbalance) है। यह अनुभव वस्तुनिष्ठ रूप से सत्य हो, यह आवश्यक नहीं है। किसी संबंध की वास्तविक स्थिति और पिता द्वारा उसकी अनुभूति में अंतर हो सकता है। इसलिए यह सिद्धांत संबंधों का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन प्रस्तुत करने का दावा नहीं करता, बल्कि पिता के व्यक्तिपरक मनोवैज्ञानिक अनुभव तथा उसके आधार पर विकसित होने वाली अनुकूलन–प्रक्रिया की व्याख्या करता है। भविष्य के अनुसंधानों में पिता, संतान तथा अन्य पारिवारिक सदस्यों से प्राप्त बहु–स्रोत आँकड़ों के माध्यम से इस अंतर का परीक्षण किया जा सकता है।

यहां यह भी ध्यान देना आवश्यक होगा कि, सांस्कृतिक मूल्य, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, व्यक्तित्व, वैवाहिक संतुष्टि, परिवार की संरचना तथा मानसिक स्वास्थ्य जैसे कारक इस प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए विभिन्न संस्कृतियों, आयु–समूहों तथा पारिवारिक संदर्भों में PEWT की उपयोगिता की जाँच आवश्यक होगी। विशेष रूप से अनुदैर्ध्य तथा मिश्रित–पद्धति अनुसंधान यह स्पष्ट कर सकते हैं कि भावनात्मक प्रत्याहार समय के साथ किस प्रकार विकसित होता है तथा किन परिस्थितियों में पुनः भावनात्मक निकटता स्थापित हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, PEWT का उद्देश्य प्रत्येक प्रकार के पितादृसंतान संबंध की व्याख्या करना नहीं है। यह सिद्धांत मुख्यतः उन परिस्थितियों पर केंद्रित है, जिनमें पिता और किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध अथवा वयस्क संतान के बीच दीर्घकालिक भावनात्मक पारस्परिकता में कमी का अनुभव होता है। अतः जिन परिस्थितियों में गंभीर मानसिक विकार, मादक द्रव्यों की निर्भरता, शारीरिक या भावनात्मक दुर्व्यवहार, अथवा अन्य असाधारण नैदानिक एवं विधिक परिस्थितियाँ प्रमुख भूमिका निभाती हों, वहाँ इस सिद्धांत का प्रत्यक्ष अनुप्रयोग सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। ऐसे संदर्भों में अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक, चिकित्सीय तथा सामाजिक कारकों को भी समान रूप से ध्यान में रखना आवश्यक होगा।

निष्कर्ष

Paternal Emotional Withdrawal Theory (PEWT) वयस्क पितादृसंतान संबंधों के अध्ययन के लिए एक

नवीन, प्रक्रिया–आधारित तथा परीक्षण–योग्य सैद्धांतिक रूपरेखा प्रस्तुत करती है। यह सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि कुछ परिस्थितियों में पिता का भावनात्मक प्रत्याहार प्रेम अथवा अभिभावकीय उत्तरदायित्व में कमी का संकेत नहीं होता, बल्कि संबंधों में अनुभव किए गए दीर्घकालिक भावनात्मक असंतुलन के प्रति विकसित होने वाली एक संभावित मनोवैज्ञानिक अनुकूलन–प्रक्रिया हो सकता है। इस सिद्धांत का मुख्य योगदान यह है कि यह संबंधों के अंतिम परिणामों की अपेक्षा उन क्रमिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर बल देता है, जिनके माध्यम से पिता अपनी अपेक्षाओं, भावनात्मक सीमाओं तथा व्यवहारिक सहभागिता का पुनर्संगठन करते हैं।

चॅम्ज यह भी स्वीकार करता है कि यह प्रक्रिया सभी पिताओं अथवा सभी संतानों के लिए समान नहीं होती। परिवार की संरचना, संबंधों का इतिहास, भावनात्मक पारस्परिकता तथा सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ इस प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं। इस कारण PEWT को एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में नहीं, बल्कि एक परीक्षण–योग्य वैचारिक मॉडल के रूप में देखा जाना चाहिए। यदि भविष्य के अनुभवजन्य अनुसंधान इसके प्रमुख प्रतिपादनों का समर्थन करते हैं, तो यह सिद्धांत परिवार मनोविज्ञान, अंतरपीढ़ीगत संबंधों तथा पिता–संतान संबंधों के साहित्य में एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक योगदान प्रदान कर सकता है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–

1. Bengtson, V. L. (2001). Beyond the nuclear family: The increasing importance of multigenerational bonds. Journal of Marriage and Family, 63(1), 1–16.
2. Bowen, M. (1978). Family therapy in clinical practice. Jason Aronson.
3. Bowlby, J. (1982). Attachment and loss: Vol. 1. Attachment (2nd ed.). Basic Books. (Original work published 1969)
4. Cabrera, N. J., Volling, B. L., & Barr, R. (2018). Fathers are parents, too! Widening the lens on parenting for children's development. Child Development Perspectives, 12(3), 152–157. https://doi.org/10.1111/cdep.12275
5. Elder, G. H., Jr., Johnson, M. K., & Crosnoe, R. (2003). The emergence and development of life course theory. In J. T. Mortimer & M. J. Shanahan (Eds.), Handbook of the life course (pp. 3–19). Kluwer Academic/Plenum Publishers.
6. Fingerman, K. L., Cheng, Y. P., Birditt, K. S., & Zarit, S. (2012). Only as happy as the least happy child: Multiple grown children's problems and successes and middle-aged parents' well-being. The Journals of Gerontology: Series B: Psychological Sciences and Social Sciences, 67(2), 184–193. https://doi.org/10.1093/geronb/gbr086
7. Gross, J. J. (1998). The emerging field of emotion regulation: An integrative review. Review of General Psychology, 2(3), 271–299.
8. Gross, J. J. (2015). Emotion regulation: Current status and future prospects. Psychological Inquiry, 26(1), 1–26.
9. Grossmann, K., Grossmann, K. E., Kindler, H., & Zimmermann, P. (2002). A wider view of attachment and exploration: Stability and change during the years of immaturity. In J. Cassidy & P. R. Shaver (Eds.), Handbook of attachment: Theory, research, and clinical applications (pp. 857–879). Guilford Press.
10. Jensen, A. C., & Whiteman, S. D. (2014). Parents' differential treatment and adolescents' delinquent behaviors: Direct and indirect effects of difference-score and perception-based measures. Journal of Family Psychology, 28(4), 549–559. https://doi.org/10.1037/a0036888
11. Lamb, M. E. (Ed.). (2010). The role of the father in child development (5th ed.). John Wiley & Sons.
12. Lüscher, K., & Pillemer, K. (1998). Intergenerational ambivalence: A new approach to the study of parent–child relations in later life. Journal of Marriage and Family, 60(2), 413–425.
13. Pillemer, K., Munsch, C. L., Fuller-Rowell, T., Riffin, C., & Suitor, J. J. (2012). Ambivalence toward adult children: Differences between mothers and fathers. Journal of Marriage and Family,

74(5), 1101–1113. https://doi.org/10.1111/j.1741-3737.2012.01004.x

14. Sarkadi, A., Kristiansson, R., Oberklaid, F., & Bremberg, S. (2008). Fathers' involvement and children's developmental outcomes: A systematic review of longitudinal studies. Acta Paediatrica, 97(2), 153–158.
15. Suitor, J. J., Sechrist, J., Gilligan, M., & Pillemer, K. (2008). Intergenerational relations in later life: Mothers' favoritism and sibling tension. Family Relations, 57(5), 574–586.

Cite this Article

"डॉ. संजय कुमार; डॉ. मनीष कांत", "पैतृक भावनात्मक प्रत्याहार सिद्धांत (PEWT): पिता–वयस्क संतान संबंधों में मनोवैज्ञानिक अनुकूलन को समझने हेतु एक प्रक्रिया–आधारत वैचारक रूपरेखा", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:5, May 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."